भारतीय चित्रपट संगीत में शास्त्रीय गायक कलाकारों का योगदान

JAGTAR SINGH PANESAR

Research Scholar, Department of Music, Panjab University, Chandigarh

सार संक्षेपिका

भारतीय चित्रपट संगीत में शास्त्रीय संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है। चित्रपट संगीत में भारतीय शास्त्रीय गायक कलाकारों का योगदान अतुलनीय है। जब सवाक् फिल्मों का निर्माण हुआ तब जो संगीत उनमें अमल हुआ वह शास्त्रीय संगीत पर आधारित था क्योंकि जो फिल्में उस समय बनी उनका विषय ज्यादातर भारती संस्कृति के आधार पर ही होता था। पहले संगीत रियासतों में हुआ करता था। जैसे बहुत सारी फिल्मों में राज-दरबारों में शास्त्रीय गायक राग संगीत एवं शास्त्रीय संगीत गाते दिखाई देते हैं—जैसे कि भारतीय चित्रपट 'जलसाघर' में उ. समालम अली खां साहब द्वारा गाया गया राग मियां मल्हार। उस समय के संगीत निर्देशक भी शास्त्रीय संगीत के अच्छे जानकार थे और चित्रपट संगीत में शास्त्रीय संगीत का प्रयोग करते थे। मुख्यतः चित्रपट गीतों का चलन और स्वरूप किसी विशेष राग के आधार पर ही होता था और गायन भी शास्त्रीय संगीत की दृष्टि से उच्च कोटि का होता था। इन गीतों के पार्श्व गायक या तो शास्त्रीय संगीत से अच्छी तरह परिचित होते थे या स्वयं शास्त्रीय गायक ही होते थे जिनमें उ. बड़े गुलाम अली खां, उ. सलामत अली खां, उ. अमीर खां, पं. भीमसेन जोशी इत्यादि विशेष उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने भारतीय चित्रपटों के माध्यम से शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका

बीज शब्द

भारतीय चित्रपट संगीत, शास्त्रीय गायक कलाकार

भूमिका

शास्त्रीय संगीत का तात्पर्य है मर्यादित एवं नियमों से बाधित संगीत जो निश्चित परम्परा के साथ प्रस्तुत किया जाता है। निःसंदेह शास्त्रीय संगीत जनसाधारण का संगीत नहीं हो सकता, परन्तु उसका प्रभाव सृष्टि के प्रत्येक पक्ष में अनुभव किया जा सकता है। इसका प्रभाव सर्वव्यापी है। स्वर सम्राट तानसेन ने अपने संगीत के प्रभाव से पत्थर को पानी करके यह साबित कर दिया कि शास्त्रीय संगीत में असीमित व अलौकिक शक्ति है। इसी शास्त्रीय संगीत को जनसाधारण तक पहुँचाने का सरल व सशक्त साधन है—फिल्म संगीत।

फिल्म संगीत ने शास्त्रीय संगीत को सार्वजनिक रूप दिया है। इस माध्यम से शास्त्रीय संगीत को कम से कम समय में अत्यधिक सुन्दरता के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है जिससे जनसाधारण उसका आसानी से रसास्वादन कर सकता है। अतः फिल्म संगीत की बढ़ती लोकप्रियता व प्रभाव को आज के दौर में सर्वत्र देखा जा सकता है। फिल्मों को लोकप्रिय व प्रभावशाली बनाने में संगीत की बड़ी अहम् भूमिका होती है।¹

पुराने हिन्दी चित्रपटों में अधिकांशतः जो गीत-संगीत का प्रयोग होता था वह शास्त्रीय संगीत प्रधान होता था। शास्त्रीय संगीत में शास्त्र सम्मत कुछ नियमों व बन्धनों का निर्वाह अवश्य होता

¹ लक्ष्मी नारायण गर्ग (सम्पादक), संगीत (पत्रिका), जून, 2001, पृ. 5

है। अतः इन नियमों का पालन चित्रपटों में, किया भी जाता था क्योंकि चित्रपट का प्रेरक भारतीय रंगमंच था। सन् 1922-30 तक नाटकों का राष्ट्रीय स्तर पर बोलबाला था। भास्कर बुवा बखले, हीराबाई बड़ौदेकर, पण्डित विनायक राव पटवर्धन इत्यादि जैसे कई संगीतज्ञों ने नाटकों में, संगीत-निर्देशन करके नाट्य संगीत तथा शास्त्रीय संगीत के सम्बंध को अधिकाधिक सुदृढ़ बनाया।¹

ख़्याल गायन के सुप्रसिद्ध घरानों से तैयार हुए संगीतकार, अपने-अपने घरानेदार संगीत का ही प्रयोग करते थे। इस समय के कलाकारों में स्वर, लय, ताल व रागों की पूर्ण जानकारी और अभिजात संगीत की प्रतिभा होती थी। उस समय के प्रसिद्ध संगीतज्ञ उस्ताद अल्लादिया ख़ाँ, पण्डित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, बझेबुवा, अमान अली ख़ाँ, अब्दुल करीम ख़ाँ आदि से सीखे हुए व्यक्तित्व थे— श्री गोविन्दराव टेंबे, प्रो. बी.आर. देवधर, केशवराव भोले, सुरेश बाबू माने आदि। इसके पश्चात् मास्टर माधोलाल, जद्दन बाई, अनिल बिस्वास, बसन्त देसाई, जयदेव ये उच्चकोटि के संगीत निर्देशक हुए हैं। इन सबका शास्त्रीय संगीत पर पूर्ण अधिकार था। इनकी रचनाएँ विशुद्ध रागों पर आधारित होती थीं।²

एक युग था, जब जनता केवल चलती-फिरती छायाओं को देखकर ही अपना मनोरंजन कर लेती थी। विज्ञान की प्रगति के साथ ही इन छायाओं ने स्वर भी प्राप्त कर लिया। इसके साथ ही संगीत ने चलचित्र-जगत् में पदार्पण किया तथा फिर पार्श्व-पद्धति (प्लेबैक-सिस्टम) के प्रचलन के पश्चात् से संगीत का स्थान फिल्मों में दिन-प्रतिदिन महत्त्वपूर्ण होता गया। यहाँ तक कि संगीत की अन्य शाखाओं, यथा शास्त्रीय संगीत, लोक-संगीत तथा सुगम संगीत की ही भाँति कुछ विद्वानों ने 'फिल्म-संगीत' नामक एक अलग शाखा स्वीकर कर ली और शास्त्रीय संगीत को फिल्म-संगीत में इतना महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है कि हम फिल्म-संगीत अथवा शास्त्रीय संगीत की एक अलग शाखा बना सकते हैं और सुविधा के लिए इसे 'फिल्मी शास्त्रीय संगीत' की संज्ञा प्रदान कर सकते हैं। 'बैजू बावरा', 'बसन्त-बहार', 'तानसेन', 'शबाब', 'मेरी सूरत, तेरी आँखें', 'अनुराधा' आदि फिल्मों के गीतों ने सामान्य जनता का ध्यान शास्त्रीय संगीत की ओर आकर्षित किया और शास्त्रीय रागों के प्रति जनता में रुचि उत्पन्न की। शास्त्रीय रागों पर आधारित इन फिल्मों के गीत जनता में बहुत लोकप्रिय हुए। आज भी 'मन तड़पत हरि-दर्शन को आज' (बैजू बावरा), 'पूछो न कैसे मैंने रैन बिताई' (मेरी सूरत, तेरी आँखें)—जैसे गीत संगीत-प्रेमियों की जुबान पर हैं। इन फिल्मों के अतिरिक्त बहुत सी ऐसी फिल्में भी आती रहीं, जिनमें एकाध गीत शास्त्रीय संगीत का रंग लिए रहता है।³

1 डॉ. विमल, हिन्दी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास, पृ. 68

2 डॉ. विमल, हिन्दी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास, पृ. 69

3 लक्ष्मी नारायण गर्ग (सम्पादक), कैलाश पंकज श्रीवास्तव, फिल्मों में शास्त्रीय गीत : एक विहंगावलोकन (लेख), संगीत (पत्रिका), जनवरी, 1973, पृ. 11

शास्त्रीय रागों का प्रयोग फिल्मी गीतों में मुख्य रूप से दो प्रकार से हुआ। प्रथम, गीत किसी राग-विशेष पर केवल आधारित हो या उसमें स्वरबद्ध हो, किंतु शास्त्रीय गायकी की भाँति उसमें आलाप-तान आदि कठिन अंग न हों तथा बंदिश सीधी व सरल हो। कभी-कभी तो इन गीतों का स्वर इतना सरल रहता है कि साधारण श्रोतावर्ग इन गीतों का संबंध रागों से करता ही नहीं। इस श्रेणी के गीतों में कदाचित् सबसे अधिक गीत भैरवी राग के होंगे, जैसे 'दो हंसों का जोड़ा बिछड़ गयो रे' (गंगा-जमना), 'ऐ मेरे दिल, कहीं और चल' (दाग), 'बोल राधा, बोल' (संगम) आदि। अन्य रागों में भी ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं, जैसे 'आँसू भरी हैं, ये जीवन की राहें' (यमन), 'उनसे आया न गया, हमसे बुलाया न गया' (बागेश्वरी) तथा 'जाने कहाँ गए वो दिन' (शिवरंजनी) इत्यादि। दूसरी श्रेणी में वे गीत रखे जा सकते हैं, जिनमें यथासंभव राग को उसके शुद्ध रूप में आलाप-तान आदि से युक्त शास्त्रीय शैली में प्रस्तुत किया हो, जैसे-'जिया ले गयो री, मोरा साँवरिया' (फिल्म : अनपढ़, राग यमन), 'छम-छम नाचत आई बहार' (फिल्म : छाया, राग : बहार)।

दुमरी और दादरा-अंग के गीतों की फिल्मों में कमी नहीं रही। उदाहरणार्थ 'फुलेंगदवा न मारो', 'लागा चुनरी में दाग', 'हटो, काहे को झूठी बनाओ बतियाँ' इत्यादि। फिल्मी ध्रुवपदों के भी उदाहरण दिए जा सकते हैं, यथा-'सप्त सुरन तीन ग्राम' (फिल्म : संगीत-सम्राट् तानसेन)। जैसे-जैसे फिल्मों में शास्त्रीय नृत्य को स्थान मिला, उसके साथ-साथ फिल्मों में तराने भी सुनाई पड़ने लगे। फिल्म 'सुवर्ण सुंदरी' का तराना 'ना दिर दिर तोम तदानी' अभी तक संगीत-प्रेमी श्रोतागण भुला नहीं पाए होंगे। इसके अतिरिक्त त्रिवट और चतुरंग-जैसी गायन-शैलियाँ, जिनके उदाहरण हमें शास्त्रीय गायकों के कम प्राप्त होते हैं, फिल्मी गीतों में हमें प्रचुरता से परिलक्षित होती हैं। 'मधुबन में राधिका नाचे रे' (फिल्म : कोहिनूर) – जैसे त्रिवट और चतुरंग-अंगों से गाए गए गीतों के अनेकों उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं। इससे भी अधिक रुचिकर उदाहरण है 'रागमालिका' का, जोकि बहुत कम सुनने को मिलती है। फिल्म 'सुवर्ण सुंदरी' के गीत 'कुहू-कुहू बोले कोयलिया' में जिस सुंदरता तथा कुशलता से भिन्न-भिन्न अंतरों को भिन्न-भिन्न रागों में गाकर हर बार स्थायी से आकर मिला गया है, वह वास्तव में सराहनीय है।¹

सन् 1940 से 1962 तक के चित्रपटों का गीत-संगीत शास्त्रीय संगीत पर ही आधारित है। वैसे तो अनगिनत गीत हैं तो विभिन्न संगीतकारों ने शास्त्रीय संगीत में निबद्ध किये हैं और जो चिरंजीवी भी हैं, अमर हैं परन्तु कुछ प्रमुख गीत ऐसे भी हैं जो पूर्णतया शास्त्रीय हैं।

यहाँ पर कुछ प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक कलाकारों का उल्लेख किया गया है, जिन्होंने चित्रपट संगीत में योगदान दिया :-

1 लक्ष्मी नारायण गर्ग (सम्पादक), कैलाश पंकज श्रीवास्तव, फिल्मों में शास्त्रीय गीत : एक विहंगावलोकन (लेख), संगीत (पत्रिका), जनवरी, 1973, पृ. 11

उस्ताद अमीर खां

उ. शहमीर खां, जो कि एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ और इन्दौर राज्य के दरबारी कलाकृत थे। इनके पुत्र उस्ताद अमीर खां की शास्त्रीय गायन के क्षेत्र में एक विशिष्ट पहचान हैं। प्रारम्भिक शिक्षा इनको अपने पिता से मिली और महान ध्रुवपद गायक अलावन्दर खां, नसीरुद्दीन खां तथा बीनकार मुराद खां जैसे कई महान् संगीतज्ञों के सम्पर्क से उ. अमीर खां के संगीत ज्ञान में पर्याप्त वृद्धि हुई। इनके गायन में किराना घरने की छाप थी। शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त चलचित्र क्षेत्र में भी पार्श्व गायक के रूप में इन्होंने योगदान दिया। जिनमें से कुछ प्रमुख चलचित्रों का विवरण प्रस्तुत है –¹

बैजू बावरा (1952)

नौशाद के संगीत निर्देशन में बना यह चलचित्र शास्त्रीय गीत प्रधान है। इस चलचित्र में उस्ताद अमीर खां तथा डी.वी. प्लुस्कर ने देशी राग में निबद्ध बन्दिश “आज गावत मन मेरो झूम के” तोरी जय-जय करतार (राग धनाश्री), घनन घनन घन गरजो रे (मेघ मल्हार) जो कि द्रुत लय तीन ताल में गाई गई। इनमें राग की शुद्धता पर पूर्णतः ध्यान दिया गया है।

झनन-झनन पायल बाजे (1955)

वी. शांताराम के निर्देशन तथा बसन्त देसाई के संगीत निर्देशन में बना यह चलचित्र शास्त्रीय संगीत से ओत-प्रोत है। इस चलचित्र में उ. अमीर खां ने राग अड़ाना पर आधारित शीर्षक गीत “झनक-झनक पायल बाजे” ख्याल शैली में गाया।

कोहीनूर (1960)

एस. यू. के निर्देशन तथा नौशाद के संगीत निर्देशन में तैयार यह शास्त्रीय संगीत प्रधान चलचित्र है। इस चलचित्र का एक गीत पार्श्व गायक रफी तथा उ. अमीर खां ने बहुत ही सुन्दर ढंग से गाया। हमीर राग पर आधारित “मधुबन में राधिका नाचे रे” में आलाप में रफी तथा तानों के लिए उ. नियाज़ अहमद, फैयाज़ अहमद को आमंत्रित किया गया। इसके अतिरिक्त “बसन्त बहार” चलचित्र—(1956) में भी उ. अमीर खां ने पार्श्व गायक के रूप में योगदान दिया। इस चलचित्र के निर्देशक राजा नवा थे तथा संगीत निर्देशक शंकर जयकिशन हैं।

उस्ताद बड़े गुलाम अली खां

संगीत जगत् में ऐसे बहुत कम गायक हुए जिन्होंने अपनी स्वर साधना का अद्भुत परिचय दिया। इन्होंने संगीत की शिक्षा अपने चाचा काले खां तथा अपने पिता उस्ताद अली बख्श से ली। यह पटियाला घराने से सम्बन्धित थे। शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त कुछेक चलचित्र क्षेत्र में भी आपने अपनी गायन कला का पार्श्व प्रदर्शन किया जैसे:—

¹ लक्ष्मी नारायण गर्ग, हमारे संगीत रत्न, पृ. 122

मुगल-ए-आजम (1960)

इस चलचित्र के निर्देशक के. आसिफ तथा संगीत निर्देशक नौशाद अली हैं। इस चलचित्र का एक गीत “प्रेम जोगन बनके—” राग सोहनी पर आधारित बड़े गुलाम अली साहब ने सुन्दर रचना गाई।¹

पं. भीमसेन जोशी—वर्तमान शास्त्रीय संगीतज्ञों में पं. भीमसेन जोशी को प्रमुख स्थान प्राप्त है। बाज पं. भीमसेन जोशी किराना घराने के श्रेष्ठ गायक हैं। अल्पायु में ही हारमोनियम की शिक्षा पं. अगसक चन्नप्पा—कुर्त फोटी—दारा राग भीमपलासी से शुरू हुई। पं. रामाभाऊ कुंदगोलकर सवाई गन्धर्व के पास से भी संगीत की शिक्षा ली। चलचित्र क्षेत्र में पार्श्व गायक के रूप में भी इन्होंने योगदान दिया।

बसन्त बहार (1956)

शंकर जयकिशन के संगीत निर्देशन में तैयार यह चलचित्र शास्त्रीय संगीत प्रधान है। इस चलचित्र का एक गीत बसन्त तथा बसन्त बहार राग पर आधारित “केतकी गुलाब जूही...” जिसमें शास्त्रीय संगीत की काफी हद तक रक्षा की गई। पार्श्व गायन में मन्नाडे के सुरीले शब्दोच्चारण तथा पं. भीमसेन जोशी की दर्द भरी तानों ने इस ख्याल में निराला ही समय बांधा है।

अनकही (1985)

निर्देशक अमोल पालेकर तथा संगीत निर्देशक जयदेव के संगीत निर्देशन में यह शास्त्रीय गीत प्रधान चलचित्र बना। इस चलचित्र में पं. भीमसेन जोशी जी ने कुछेक भजन “रघुबर तुम को मेरी लाज” पार्श्व गायन में गाये इस चलचित्र के अन्तर्गत कुछ आलाप भी लिये।² “सनत तुलसीदास” चलचित्र में भी इन्होंने पार्श्व गायक के रूप में योगदान दिया।

उ. सलामत अली खाँ

बचपन से अपनी गायकी का लोहा मनवाते उ. सलामत अली खाँ का जन्म शाम चौरासी गाँव में हुआ जो कि शाम चौरासी घराने से भी जाना जाता है। इन्होंने संगीत की शिक्षा अपने वालिद विलायत अली खाँ और अपने दादा मियाँ करीम बख्श से ली। शास्त्रीय संगीत के कुछ चलचित्रों में आपने अपनी गायक कला का पार्श्व प्रदर्शन किया, जो इस प्रकार है :

जलसाघर (1958)

निर्देशक सत्यजीत रेय तथा संगीत निर्देशक विलायत खाँ के संगीत निर्देशन में यह शास्त्रीय संगीत प्रधान चलचित्र बना। इस चलचित्र में उ. सलामत अली खाँ साहब ने राग मियाँ मल्हार की बंदिश “जल रस बूँदन बरसे” को पार्श्व गायक के रूप में गाया।³

1 लक्ष्मी नारायण गर्ग, हमारे संगीत रत्न, पृ. 265

2 लक्ष्मी नारायण गर्ग, हमारे संगीत रत्न, पृ. 306

3 <https://youtu.be/Z9eXZ0ocCjQ>

ताल महल

संगीत निर्देशक निसार बाज़मी के संगीत में सलामत अली खाँ साहब ने राग ललित में 'तू है सरापा ताज महल' गीत को पार्श्व गायक के रूप में गाया।

अमर समाधी (1950)

संगीत निर्देशक बसंत देसाई के संगीत में सलामत अली खाँ और लगा मंगेशकर द्वारा युगल रूप में गाई गयी राग यमन की राग-मालिका भी हमें प्राप्त होती है।¹ इसके अतिरिक्त मौसीकर, बाजी, स्त्री-पुरुष, गीत कहीं संगीत कहीं आदि चलचित्रों में भी इन्होंने पार्श्व गायक के रूप में योगदान दिया है।

संदर्भ

- गर्ग, लक्ष्मी नारायण (जून 2001) संगीत (पत्रिका), संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश
 गर्ग, लक्ष्मी नारायण (जनवरी, 1973) फिल्मों में शास्त्रीय गीत : एक विहंगावलोकन, संगीत (पत्रिका), संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश
 गर्ग, लक्ष्मी नारायण अक्टूबर (1984) हमारे संगीत रत्न, संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश, चतुर्थ संस्करण
 डॉ. विमल (2010) हिन्दी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास, संजय प्रकाशन, दिल्ली

1 <https://youtu.be/R7RSbS4qiLrU>